

Karma: Freedom, Unrestrained Freewill & Subservience to act

Svatantrataa - Freedom of actions, Svachchandataa - Unrestrained Freedom & Partantrataa - Unconditional Subordination

By Swami Vivekanand Parivrajak

September 01, 2020

Subservience is Unconditional Subordination; one has to follow the orders even when he/she does not want to.

1- Svatantrataa, Freedom of actions

The Vedas, the Constitution for righteous living revealed by Eeshvar (God), spells out, that we all need to do certain actions, namely – perform Yajnas and other benevolent deeds, give donations, meditate to be in spiritual union with God, help parents and the elderly, protect other creatures, eat vegetarian food, etc.

Freedom is the condition when a person does any of the above deeds according to his free will and ability. That freedom is not absolute, restrained by the spiritual laws.

2- Svachchandataa, Unrestrained Freewill to do licentious deeds or Acting without constraint

Not doing the deeds mentioned in the constitution and/or willfully committing forbidden acts amount to Svachchandataa, acting without constraint or licentious deeds; examples - theft, lying, deceit, injustice, adultery, exploitation, bullying etc.

3- Partantrataa, Subservience or Unconditional Subordination.

When one is forced by another person to act contrary to the divine decree constitution amount to subservience to do deeds; example - domination by a foreign ruler who ignoring the divine commands applies unfair laws forcing people to pay half of their income as taxes, compelling people to eat eggs and non-vegetarian food.

4- Unjust Suffering from Subservience

The miseries caused to the people or subordinates by a ruler or a superior who acts unlawfully amount to Unjust Suffering from Subservience or Subordination; example – Kansa and other tyrants who caused their citizens to suffer from their unreasonable orders.

5- Submission to Justice and the Law of Karma, the outcome of actions.

All are bound to bear the consequences of actions. One who deliberately commits sin (lying, stealing, etc.) is bound to undergo sufferings. Such person may go unpunished under the laws of the country but not by the All-just Eeshvar (God); rebirth may be in lower species – birds, animals, etc. The righteous will be reborn as humans and be happy.

All souls are bound to go through the Divine justice, that is - reap the fruits for good actions and penalties for evil deeds. It is only fair that evil doers are never rewarded with positive outcomes. All are under restriction as to the outcome of all actions.

With a calm mind, we need to ponder over all these and choose the options:

- ◊ Is freedom with its limitations good?
- ◊ Is unrestrained freewill good?
- ◊ Is unconditional subordination good?

It is obvious that most would choose the principle of freedom to act with a framework - the rules of Divine justice and be happy. As intelligent people, we need to plan carefully and act accordingly, keeping in mind the desired outcome.

Swami Vivekanand Parivrajak, Darshan Yog Mahavidyalaya, Rojad, Gujarat, India

(translated by Acharya Bramdeo Mokoonlall)

Swami Vivekanand Parivrajak

September 01, 2020

परतंत्रता क्या है? जब न चाहते हुए भी दूसरे के आदेश का पालन करना पड़े।

1- कर्म करने की स्वतंत्रता-- ईश्वर के संविधान वेदों में कुछ कर्म करने को बताए गए हैं, जैसे यज्ञ करना दान देना ईश्वर की उपासना करना माता पिता की सेवा करना प्राणियों की रक्षा करना शाकाहारी भोजन खाना इत्यादि। यदि कोई व्यक्ति इन कर्मों में से अपनी इच्छा रुचि योग्यता सामर्थ्य के अनुसार कोई कार्य करता है, तो इसे स्वतंत्रता कहेंगे। *स्वतंत्र अर्थात् अपनी इच्छा के अनुसार संविधान के अनुकूल कार्य करना।*

2- कर्म करने की स्वच्छंदता. संविधान में बताए गये कर्मों में से न करके, संविधान के विरुद्ध अपनी मनमानी से निषिद्ध कर्मों को करना, *यह स्वच्छंदता कहलाती है।* जैसे चोरी करना झूठ बोलना धोखा देना अन्याय करना व्यभिचार करना दूसरों का शोषण करना किसी को धमकी देना इत्यादि।*

3- कर्म करने की परतंत्रता। जब ईश्वरीय संविधान के विरुद्ध किसी अन्य मनुष्य के दबाव से, न चाहते हुए भी हमें कर्म करने पड़ें, तो *यह कर्म करने की परतंत्रता कहलाएगी।* जैसे कोई विदेशी राजा हम पर शासन करे, और ईश्वरीय संविधान के विरुद्ध अपने मनमाने कानून हम पर लागू कर दे, कि -- प्रजा को अपनी आय का आधा भाग अर्थात् 50% धन, टैक्स के रूप में देना होगा। प्रजा के सभी लोगों को एक एक अंडा प्रतिदिन खाना होगा। सप्ताह में एक बार मांसाहार भी करना होगा इत्यादि। *तो यह कर्म करने की परतंत्रता मानी जाएगी।*

4- अन्यायपूर्वक दुख भोगने की परतंत्रता। इसी प्रकार से यदि न्याय के विरुद्ध, अन्यायपूर्वक कोई राजा हमें दुख देगा, तो वह भी परतंत्रता मानी जाएगी। जैसे कंस आदि राजा, अपनी प्रजा को अन्यायपूर्वक दुख देते थे।*

5- न्याय पूर्वक फल भोगने की परतंत्रता। यदि हमने पहले मनमानी कर ली थी, अर्थात् ईश्वरीय संविधान के विरुद्ध झूठ चोरी आदि कर्म किए थे। उसके दंड स्वरूप ईश्वर हमें पशु-पक्षी आदि योनियों में दुख देगा। और न चाहते हुए भी हमें उन योनियों में जाकर दुख भोगना पड़ेगा। और यदि हमने संविधान के अनुकूल अच्छे कर्म किए थे, तो ईश्वर हमें मनुष्य योनि में जन्म देकर अनेक प्रकार के सुख भी देगा।
यह फल भोगने की परतंत्रता है।

आत्मा अच्छे बुरे कर्मों का फल भोगने में ईश्वर की न्याय व्यवस्था के आधीन है, अर्थात् परतंत्र है। *कोई व्यक्ति कर्म तो करे बुरे। और फल चाहे अच्छा। ऐसा नहीं होगा। यह भी फल भोगने की परतंत्रता है। यह न्यायपूर्वक है।*

अब आप इन सभी बातों पर शांत मन से विचार करें, कि स्वतंत्रता अच्छी है? स्वच्छंदता अच्छी है? या परतंत्रता अच्छी है?

आप में से अधिकांश लोग सिद्धांत रूप में तो यही कहेंगे, कि स्वतंत्रता अच्छी है। इस स्वतंत्रता का फल ईश्वरीय नियमानुसार सुख मिलेगा।*

तो आप सब बुद्धिमान हैं। इसलिए विचार पूर्वक अपनी योजनाएं और आचरण बनाएँ। भविष्य में आपको कैसा फल चाहिए, उस को ध्यान में रखकर ही अपने कर्म करें।

- *स्वामी विवेकानंद परिव्राजक*